International Journal of Global Science Research
Vol. 5, Issue. 1, April 2018, pp. 697-699
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v5.i1.2018.97

Research paper

बुन्देलखण्ड का विन्ध्याचल पर्वत

सत्येन्द्र कुमार प्रजापति
सटई रोड, छतरपुर (म.प्र.)

Received: 09/02/2018
Revised: 17/02/2018
Accepted: 09/03/2018

प्राचीन साहित्य एवं अभिलेखों में पर्वत श्रेणियांे से संबंधित अनेक विवरण प्राप्त होते हैं। किसी भी क्षेत्र का अध्ययन करने से पहले इस विषय की जानकारी होना आवश्यक हो जाता है कि उसकी भौगोलिक स्थिति क्या है ? एस.एम. अली[1] ने पर्वतांे को अनेक भागो में विभाजित किया है मर्यादापर्वत, विक्षम्बपर्वत, कुलपर्वत तथा वर्ष पर्वत। पुराणों में हिमवत् को छोड़कर सात कुल पर्वतांे के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

'महेन्द्रो मलयः सा शुक्तिमान ऋक्ष पर्वतः विनघ्याश्च पारियात्रश्च सप्तैवति कुलाचलः'[2]

कुल का अर्थ होता है परिवार, नस्ल, राष्ट्र तथा जाति। महेन्द्र को कलिंग[3] से , मलय[4] को पाण्ड्य से, सह्या[5] को अपरान्तक से, शुक्तमत[6] को भल्लाट से, ऋक्ष[7] को महिष्मती से, विन्ध्य[8] को आट्ट (मध्य भारत की वन्य जातियों) से तथा परियात्र को निषादों से संबंधित किया जा सकता है।

विन्ध्याचल पर्वत

बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्रमुख शैलमालाओं में से विन्ध्याचल पर्वत एक है। उत्तर भारत को दक्षिण भारत से विन्ध्य पर्वत अपनी विस्तृत श्रृंखलाओं से अलग करता है। इस पर्वत को वर्तमान में इसी नाम से जाना जाता है। प्राचीन भारतीय साहित्य में विन्ध्य का अलग स्थान है। संस्कृत, पालि और प्राकृत साहित्य में विन्ध्याचल के विषय में रोचक जानकारी मिलती है। विन्धयाचल पर्वत का प्राचीनतम उल्लेख कौषीतकी उपनिषद्[9] में दक्षिणी पर्वत के रूप में मिलता है। वशिष्ठ धर्मसूत्र[10] में इसे आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा में स्थित बताया गया है। रामायण से ज्ञात होता है। की सुग्रीव ने विन्ध्यवासी वानरों को आमंत्रित किया था।[11] यहाँ से लाल रंग वाले दुर्दान्त, पराक्रमी वानर सुग्रीव के पास गये।[12] विन्ध्याचल पर्वत की गुफाओं में हनुमानादि वानरों ने सीता को खोजने का प्रयत्न किया।[13] संपाति के पंख जल जाने पर वह इसी पर्वत पर गिरा था।[14]

International Journal of Global Science Research **ISSN: 2348-8344 (Online)**
Vol. 5, Issue. 1, April 2018, pp. 697-699 **DOI**: 10.26540/ijgsr.v5.i1.2018.97
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved

महाभारत मे इस पर्वत को प्रसिद्ध बताया गया है। यहाँ 'सून्द' और 'असुन्द' ने घोर तपस्या की थी।[15] सुन्द की उग्र तपस्या से इस पर्वत की चोटी से धुँआ निकलने लगा।[16] वनपर्व में कहा गया है कि विन्ध्याचल पर्वत ने एक बार अपनी ऊँचाई को इतना विस्तार किया कि सूर्य का मार्ग अवरूद्ध हो गया । बाद में अगस्त ऋषि ने इसका निवारण किया।[17] अनुशासनपर्व[18] में कहा गया कि जो इस पर्वत पर हिंसा त्याग कर तपस्या करता है उन्हें सिद्धि की प्राप्ति होती है। महावंश[19] और दीपवंश[20] के अनुसार विन्ध्य और उसकी उपत्यकाओ से होता हुआ एक मार्ग ताम्रलिप्ति से पाटलीपुत्र तक जाता था। इसी रास्ते से अशोक बोधि वृक्ष ले गया था।[21] विन्ध्य के जंगलो में महाविहार से 'उत्तर' नामक श्रमण के नेतृत्व में एक हजार भिक्षु महायूप के शिलान्यास समारोह में भाग लेने गये थे।[22] इस पर्वत के दुर्ग पर 'मुण्ड' नामक बंजारों का नगर था।[23] अमरकोश[24] में विन्ध्यपर्वत का उल्लेख हिमवान्, माल्वान्, पारियात्रक आदि पर्वतों को पृथ्वी के दो पयोधर तथा विन्ध्याचल पर्वत का विस्तार समुद्र के पूर्वी किनारे से लेकर पश्चिमी किनारे तक था। कालिदास[28]ध् ने विन्ध्याचल को 'विन्ध्यपद' अर्थात ऊँचे विनध्याचल के चरण कहा है। कादम्बरी[29] में भी कालिदास ने विन्ध्याचल का विस्तार से विवरण दिया है।

विन्ध्य पर्वत गुजरात से लेकर बिहार तक विस्तृत है। इसकी पर्वत श्रृंखलायें आधुनिक मध्यप्रदेश के भेलसा, चन्देरी, कोलारस, ग्वालियर, गुना, सरदारपुर, नीमच तथा शाजापुर तक फैली हुई हैं। टॉलमी ने विन्ध्य पर्वत को 'ओयिडीयन' पर्वत कहा है। जिसमें नमदोस; (नर्मदा) तथा ननगोन (ताप्ती) नदियाँ से निकलती हैं। 'ओयिडियन से टॉलमी का तात्पर्य विन्ध्य के उस भाग से है जहाँ नर्मदा तथा ताप्ती नदियाँ निकलती है।[30] डॉ.दिनेश चन्द्र सरकार के अनुसार विन्ध्य पर्वत नर्मदा नदी दक्षिण में फैली हुई पर्वतमालायें है।[31] डॉ. एस. एम अली[32] का मत है कि पौराणिक विन्ध्य पर्वत के अंतर्गत सतपुड़ा, महादेव की पहाड़ियां हजारी बाग की पर्वत श्रृंखलाएं तथा राजमहल की पर्वत श्रेणियांे आती है। डॉ.भण्डारकर[33] के अनुसार पारियात्र विन्ध्य श्रेणी का वह भाग है जिससे चम्बल और बेतवा नदियाँ निकलती हैं। डॉ. राय चैधरी[34] इसे भोपाल के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित बताते हैं। परियात्र का पूर्वी विस्तार, जिससे धसान, केन और टोस नदियाँ निकलती हैं, विन्ध्य पर्वत का मुख्य भाग है। इन दोनों के दक्षिण में ताप्ती और वेनगंगा से लेकर उड़ीसा की वैतीणी नदी तक का भाग ऋक्ष है।[35] बुन्देलखण्ड क्षेत्र में विस्तृत विन्ध्याचल पर्वत सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा है। यही कारण है कि यहाँ की पहाड़ियों पर समय-समय पर अनेक दुर्गो का निर्माण करवाया गया। बाँदा जिले पर स्थित कालिंजर दुर्ग को जीतने के लिये महमूद गजनवी को हार का सामना करना पड़ा था । कालिंजर से बीस मील दक्षिण पश्चिम में अजयगढ़ का दुर्ग है। इन दुर्गो के अलावा मड़फा और देवगढ़ का कीर्तिगिरि दुर्ग उल्लेखनीय है।

प्राचीन युग में विन्ध्यशैल मालाओं के प्रस्तरों का सर्वाधिक उपयोग विशाल भवनों, स्तूपों और देवालयों के निर्माण के लिये किया गया। भरहुत, नचना, देवगढ, चन्देरह, गुंर्गी, कालिंजर, खजुराहो तथा अन्य कई स्थानों के मंदिरों और प्रसादों से इस तथ्य की पुष्टि होती है। कैमुर और रीवा

International Journal of Global Science Research
Vol. 5, Issue. 1, April 2018, pp. 697-699
***Available Online* at www.ijgsr.com**
© Copyright 2014 | ijgsr.com | All Rights Reserved
ISSN: 2348-8344 (Online)
DOI: 10.26540/ijgsr.v5.i1.2018.97

मालाओं के मध्य एवं भाण्डेर मालाओं के बीच में पन्ना के हीरे इन्ही रचनाओं से प्राप्त होते है।[36]

संदर्भ

1. एस.एम.अली, ज्याॅग्रफी आॅफ पुराणज, पृ. 110
2. मार्कण्डेय पुराण, 57,10, महाभारत , भीष्म पर्व, 9-11
3. रघुवंश, 4, 53-54
4. महाभारत ,8 20, 20-21
5. रघुवंश, 8, 20-21
6. महाभारत , 2, 330 5-7
7. हरिवंशपुराण, विष्णुपर्व, 38, 19
8. मत्सयपुराण, 114,46--48; मार्कण्डेयपुराण, 57,47
9. कौषतकी उपनिषद्, 2, 8
10.वशिष्ठ धर्मसुत्र, 5, 1, 9,
11. रामायण 4, 36, 2
12. रामायण, 4,36 ,24
13. रामायण, 4 ,49, 1; 4, 52, 12
14. रामायण 4, 52, 16
15. महाभारत 4, 59, 4
16. आदिपर्व, 201, 6
17. वनपर्व, 104, 6, 13-14 (गीताप्रेस)
18. अनुशासन पर्व, 26, 46
19. महावंश, 19, 6
20. दीपवंश, 16, 2
21. दीपवंश, 15, 87
22. महावंश 29, 40
23. धम्मपदट्ठक, 4, 128;सामन्त या सादिका में विन्ध्याटवीं को 'अगामंक अर´अ,
24. अंमरकोश, 47,192, 244
25. वृहत्संहिता, 42,35, 8, 17
26. वहि, 16, 1-4
25.वृहत्संहिता, 42,192,244
26.वही, 16, 1-4
27.फ्यूहर, हर्षचरित, पृ. 173
28.अवमेघ, 1.19 तुलनीय वराह पुराण, अध्याय 85
29.कादम्बरी, पृ. 85
30.ऐश्यंट इण्डिया, पृ. 109-110, 359
31.सरकार, हिस्टारिकल ज्याॅग्रफी एण्ड मेडेवल इण्डिया, पृ. 56, टिप्पणी 6
32.एस.एम अली, ज्याॅग्रफी आॅॅफ पुराणज,पृ. 112
33.भण्डारकर, एशियाटिक रिसर्चेज, खण्ड 8, पृ. 338
34.स्टडीज इन इण्डि. एण्टिकवेरी, पृ. 115
35. वायुपुराण, 1, 45, 97-103; विष्णुपुराण, 2, 3,10-11; मार्कण्डेयपुराण, 57, 19, 25; दृष्टव्य, जयचंद विधालंकार, भारत भूमि और उसके निवासी, पृ. 63-64;
36. अर्चना ठाकुर, विन्ध्यतंत्र, रमण सिंह स्नातोकत्तर महाविधालय, रीवा की पत्रिका 1961-62, पृ. 125